Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

सूचना प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भूमिका: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Suneeta Singh[1]* Dr. Arendra Singh[2]

[1] Research Scholar, Swami Vivekanand University, Sagar (MP)

[2] Professor, Department of Sociology, Swami Vivekanand University, Sagar (MP)

सार –* महिलाओं को शताब्दियों से पुरुष की केवल जीवन संगनी माना गया है। उनका अपना कोई निजी अस्तित्व नहीं। ऐसा केवल भारत में ही नहीं पश्चिमी देशों में भी देखा जाता रहा है। यूरोप में 18वीं शताब्दी में हुई प्रौद्योगिकी क्रान्ति के बाद भी स्थिति एवं विचारधारा में कोई अन्तर नहीं आया। विज्ञान एवं इंजीनियरिंग जैसे विषयों में कुछ प्रतिशत लड़कियां ही प्रवेश लेती थी, यांत्रिकी एवं इंजीनियरिंग की शिक्षा महिलाओं के लिए सदैव कठिन कार्य माना गया, क्योंकि इनके लिये महिलाओं को घर के बाहर जाकर कार्य करना पड़ता है, क्योंकि स्त्री को घर की शोभा' माना जाता था इसलिए उनके लिए यह कार्य बेहद मुश्किल मान लिया गया।

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावना

वर्तमान संदर्भ में सूचना प्रौद्योगिकी के पदार्पण ने यह परिदृश्य बदल दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी के शैशव काल में अन्य क्षेत्रों की भाँति इस क्षेत्र में भी पुरूषों ने अपना वर्चस्व बनाये रखा था, किन्तु पर्सनल कम्प्यूटर (पी0सी0) के विकास ने धीरे-धीरे स्थिति को बदलना प्रारम्भ कर दिया अब बहुत अधिक संख्या में महिलाएँ केवल कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग क्षेत्र में ही नहीं अपितु डी.टी.पी, नेटवर्किंग तथा अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही हैं। 1990 के दशक के अन्तिम वर्षो से महिलाओं ने बहुत तेजी से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपने कदम आगे बढ़ाएं है। एक व्यक्तिगत सर्वेक्षण के अनुसार' ऑन लाइन कार्य करने वाले कुल भारतीयों में प्रतिशत महिलाएं हैं। जबकि अमेरिका में यह प्रतिशत 28.3 है। अतः हम यह कह सकते है कि भारत का सूचना प्रौद्योगिकी परिदृश्य महिला मण्डित हो रहा है। अभी हाल में एक जापानी पत्रिका में प्रकाशित समाचार के अनुसार जापान में बाहर से आकर काम करने वाली महिलाओं में भारतीय महिलाओं की संख्या सबसे अधिक है। भारत में कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग में लगभग 38 प्रतिशत महिलाएं कार्यरत है। विभिन्न कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्रों में बहुत अधिक संख्या में महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है।

अमेरिका तथा यूरोपीय देशों का कम्प्यूटर सम्बन्धी कार्य बहुत अधिक मात्रा में भारत जैसे देशो में 'आउट सोर्स से किया जा रहा है, इसमें मुख्य कार्य आई.टी. इनेबल्ड सर्विस सम्बन्धी है। इस कार्य के लिए भारत में अनेक स्थानों पर 'काल सेन्टर स्थापित किये गए है। इनमें कार्य करने वालों को देर रात तक कार्य करना पड़ता है। यह कार्य भी अधिकतर वे महिलाएं कर रही हैं जो कल तक शाम सात बजे के बाद घर से बाहर रहने में डरती थी अब वे ही महिलाएं रात 2 या 3 बजे भी निडर होकर कार्य करती है।

20वीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में पुरूषों का भी विदेश जाना वर्जित था और उन्हें इसके लिये प्रायश्चित करना पड़ता था, किन्तु आज भारतीय महिलाएं भी विश्व के प्रत्येक कोने में कार्य करती मिल जाती है। इतना ही नहीं वे अपने कार्यो को बहुत मेहनत और लगन के साथ करती हैं। अपना और देश का गौरव बढ़ा रही है, कल्पना चावला इसका ज्वलंत उदाहरण है। एक समय था जब 99 प्रतिशत महिलाएं रसोई घर तक ही सीमित रहती थी, उन्हें 'गृहस्थन' (House Wife) 'गृहणी' सम्बोधन दिया जाता था। गृहणी शब्द बहुत सम्मान सूचक लगता था और उन्हें रसोई घर से बाहर आने में

1. सूचना प्रौद्योगिकी में ऐसी क्या बात है जो अधिक से अधिक महिलाओं को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है?

2. क्या भारतीय महिलाओं में ऐसी कोई विशेष दक्षता है अथवा योग्यता है। जिसके कारण वह सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अपना अच्छा भविष्य बना पाने में सफल हो पा रही है?

3. क्या महिलाओं की आर्थिक आवश्यकताएं उन्हें इस क्षेत्र में आगे बढ़नेलज्जा एवं भय का अहसास होता था।

इन विचारणीय प्रश्नों का सम्मिलित निष्कर्ष भारतीय महिलाओं को विदेशों में तथा देश में सूचना प्रौद्योगिकी की ओर खींच रहे है। विदेशी महिलाओं की कम्प्यूटर तथा सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अधिक उपलब्धता न होने के कारण भारतीय महिलाओं के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है। एक आमरीकी कम्पनी के अनुसार उनकी कम्पनी में नौकरी के लए प्राप्त प्रत्येक पाँच प्रार्थना पत्रों में दो प्रार्थना पत्र भारतीय महिलाओं के होते हैं क्योंकिसूचना प्रौद्योगिकी के कार्य महिलाओं को अन्य कार्यो की अपेक्षा अधिक रूचिकरते है।

सूचना प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भूमिका

इस अवधारणा का सीधा अर्थ यह है कि महिलाओं की परेशानियों को ध्यान में रखकर यदि आई.सी.टी. प्रोफेशन उनके लिए अनुकूल परिस्थितियों की सुविधा दिला सके तो निश्चित रूप से अन्य प्रोफेशनों की बजाय इस प्रौद्योगिकी में उनकी बेहतर भागीदारी के पर्याप्त अवसर बन सकते है।

मारहन मार्टिनः 1998 ने कहा था इन्टरनेट के प्रारम्भिक समय से ही उस पर पुरूषों का प्रभुत्व रहा परन्तु हाल के वर्षो के दौरान इसमें लड़कियों और महिलाओं की संख्या बढ़ी है। यह स्वागत योग्य है क्योंकि पुरूषों की अपेक्षा महिलाएं अधिक कुशलता से इन्टरनेट का प्रयोग करती हैं। उनकी संख्या में और अधिक बढ़त अपेक्षित है, अन्यथा समाज के आर्थिक एवंशैक्षणिक वातावरण दुष्प्रभावित होगा।

महिलाओं के लिए स्वरोजगार की अवधारणा

महिलाओं के लिए स्वरोजगार की अवधारणा अत्यधिक लाभप्रद है। क्योंकि इससे एक तो उनको मातृत्व का दायित्व निभा पाने में परेशानी नहीं होती और दूसरा यह कि वे अपने घरों में ही रहकर काम-काज के समय मेंसे अपनी सुविधानुसार परिवर्तन कर सकती है। इस सम्बन्ध में किए गए अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि अमेरिका, कैनेडा, मैक्सिको और अर्जेन्टीना की महिलाओं में घर बैठे ऐसे स्वरोजगार की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है। अतः महिलाओं की आर्थिक स्थिति और सशक्तीकरण में सुधार लाने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें स्वरोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराये जाएं और ऐसा तभी सम्भव है जब विभिन्न संगठन अपने हित में महिलाओं की दक्षता का सार्थक सदुपयोग करे।

भूदृमण्डलीकरण के अन्तर्गत सूचना प्रौद्योगिकी की रचना एक क्रान्तिकारी परिवर्तन है। इसके कारण केवल कारखाना उत्पादन का क्षेत्र ही नहीं बल्कि सेवा क्षेत्र में राष्ट्र एवं परराष्ट्र स्तर पर क्रान्तिकारी परिवर्तन घटित हुए है। अमेरिका की एक निर्माता-विक्रेता कम्पनी से चेन्नई स्थित एक परिधान फैक्ट्री भी सम्बन्धित है।

संचार और सूचना प्रौद्योगिकी की क्रान्ति ने सर्वाधिक महिलाओं की जीवन शैली को प्रभावित किया है, पारिवारिक सम्बन्धों पारम्परिक मान्यताओं और देश-विदेश में कार्यरत पारिवारिक नातेदारों से सम्बन्ध बनाने में इस प्रौद्योगिकी ने महिलाओं को संबल प्रदान किया है। इतना ही नहीं जो महिलायें पढ़-लिखकर अपना जीवन संवारना चाहती है, उन्हे भी सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न माध्यमों से काफी सहायता प्राप्त हो रही है। आजकल रेडियो दूरदर्शन द्वारा विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के व्याख्यान प्रायोजित किये जाते हैं जो अत्यधिक सारगर्भित होते हैं तथा सामान्य जीवन के लिये उपयोगी भी होते है। यदि महिलायें नियमित रूप से इन्हें देखती और सुनती है तो उन्हें घर बैठे बहुमूल्य ज्ञान प्राप्त हो सकता है तथा उन्हें स्कूल या कॉलेज जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

सामान्य ज्ञान अर्थात जनरल नॉलेज, आई.क्यू. आदि के दृष्टिकोण से भी सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न माध्यम महिलाओं के लिए अत्यधिक उपयोगी हैं। टेलीवीजन और रेडियो शिक्षित और सामान्य शिक्षित सभी महिलाओं की ज्ञान पिपासा का समन करने में सक्षम हैं राजनैतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, स्वास्थ्य, बेरोजगारी, आर्थिक या खेल सम्बन्धी सूचनाओं का श्रोत बन चुका टी0वी0 ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की महिलाओं का सबसे बढ़ा मित्र बन चुका है।

व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों में प्रशासनिक दृष्टि से डाउन साइजिंग अपने कर्मियों की संख्या कम की जा रही है। इसलिए अब अनेक लोग अपने गृह कार्यालयों से ही (स्पेशलाइन्ड सर्विसों) विशेषीकृत सेवाओं का कार्य करना उचित समझते हैं। इसमें सामान्यतः पति-पत्नी मिलकर काम कर रहे हैं। अब कम से कम यह पुरानी कहावत अर्थहीन हो गयी है कि “घर की महिला जब घर पर ही रहे तो घर का

www.ignited.in

काम ही करेगी।" आज इन नवीनतम परिस्थितियों में सूचना प्रौद्योगिकी ने पत्नी कोपति का साथ देने के लिए प्रोत्साहित किया है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक संरचना के मूल्यांकन में स्त्री एवं पुरूष का लैंगिक आधार एक परम्परागत कारक अवश्य है किन्तु इसका निर्धारण भी प्राचीनकाल में हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गतपुरूष प्रधान पितृसत्ता के उत्पादन के सम्बन्धों के आधार पर ही हुआ।

भारतीय सामाजिक संरचना में हिन्दू समाज में पुरूषों का उच्च स्थानप्राप्त करना या स्तरीकरण में उच्च स्थिति ग्रहण करने का मुख्य कारण यह है कि प्रारम्भ से ही उनके पास आर्थिक अधिकार और उत्पादन के संसाधनों का एकाधिकार था। अतः पुरूषों ने अपने आर्थिक साम्राज्य में अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए महिलाओं को घर के अन्दर ही सीमित करके शारीरिक रूप से कमजोर मान लिया। हिन्दू सामाजिक संरचना इतनी जटिल है कि महिला और पुरूष की समस्या को सामाजिक व्यवस्था से अलग नहीं किया जा सकता फिर भी आर्थिक सम्बन्ध ही अधिकांशतः स्त्री और पुरूष की सामाजिक स्थिति का निर्धारण करते हैं।

यह अध्ययन प्रकार्यात्मक प्रारूप द्वारा प्रेरित महिला और पुरूष की सामाजिक स्थिति और भूमिका में प्रचलित उस प्रवृत्ति की वैधता पर प्रश्न निर्भर करता है, इसलिए अमेरिका और पूरे यूरोप की वेव यूजर्स महिलाओं की पसंद ट्रेवल रिटेल और फैमली केयर की वेबसाइट है। परन्तु भारत में उच्च आय वर्ग के 24,848 भारतीय यूजर्स के सर्वेक्षण में यह तथ्य प्रकाश में आया कि भारतीय महिलायें सर्वाधिक जॉब से सम्बन्धित वेबसाइट को विसाइट भी सम्मिलित हैं। चूंकि वेव का उपयोग मूलतः आयु के औसत पर हीजिट करती हैं।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक संरचना के मूल्यांकन में स्त्री एवं पुरूष का लैंगिक आधार एक परम्परागत कारक अवश्य है किन्तु इसका निर्धारण भी प्राचीनकाल में हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गतपुरूष प्रधान पितृसत्ता के उत्पादन के सम्बन्धों के आधार पर ही हुआ।

भारतीय सामाजिक संरचना में हिन्दू समाज में पुरूषों का उच्च स्थानप्राप्त करना या स्तरीकरण में उच्च स्थिति ग्रहण करने का मुख्य कारण यह है कि प्रारम्भ से ही उनके पास आर्थिक अधिकार और उत्पादन के संसाधनों का एकाधिकार था। अतः पुरूषों ने अपने आर्थिक साम्राज्य में अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए महिलाओं को घर के अन्दर ही सीमित करके शारीरिक रूप से कमजोर मान लिया। हिन्दू सामाजिक संरचना इतनी जटिल है कि महिला और पुरूष की समस्या को सामाजिक व्यवस्था से अलग नहीं किया जा सकता फिर भी आर्थिक सम्बन्ध ही अधिकांशतः स्त्री और पुरूष की सामाजिक स्थिति का निर्धारण करते हैं।

यह अध्ययन प्रकार्यात्मक प्रारूप द्वारा प्रेरित महिला और पुरूष की सामाजिक स्थिति और भूमिका में प्रचलित उस प्रवृत्ति की वैधता पर प्रश्नआर्थिक उत्पादन की प्रक्रिया से मजबूरन जोड़ दिया। महिलायें अकुशल श्रमिक के रूप में कार्य करने लगी, आर्थिक चेतना ने अपने अधिकारों केप्रति जागरूकता पैदा की उधर संचार और सूचना संसाधनों ने अभिजात्य परिवार की महिलाओं के अन्दर समानता और स्वतन्त्रता के अधिकारों को जागृत किया। आज सूचना प्रौद्योगिकी ने महिलाओं की भूमिका का राजनैतिक एवं आर्थिक महत्व इतना अधिक बढ़ चुका है कि हर स्तर पर वह अपना आरक्षण मांग रही है।

उपर्युक्त मान्यतायें सूचना प्रौद्योगिकी सैद्धान्तिक प्रकृति के आधार पर महिलाओं की भूमिका के निम्नांकित प्रश्नों की परीक्षा करने की ओर अग्रसर करती हैः- .

1. समाज में विभिन्न वर्गों की महिलाओं की स्थिति व्यवस्था के निर्धारण में कौन-कौन से तत्व निर्णायक भूमिका अदा करते हैं और किस क्षेत्र में वह निर्णायक तत्व अधिक प्रभावशाली है।

2. क्या भारतीय सामाजिक संरचना में पितृसत्तात्मक व्यवस्था आज भी विद्यमान है या सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव से वह टूट रही है?(शिथिल पड़ रही है)।

3. क्या महिला सशक्तीकरण का आधार महिलाओं का उत्पादन प्रक्रिया में सक्रीय भूमिका का निर्वाहन है?

4. क्या वैज्ञानिक शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण ने महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन किया हैं?

प्रप्रौद्योगिकी, विज्ञान और आधुनिक आयाम महिलाओं की प्रतिष्ठा और भूमिका के निर्धारण में किस प्रकार का परिवर्तन ला रहे हैं। किसी महिला स्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारतीय सामाजिक संरचना में स्त्री और पुरूष के सामाजिक प्रतिष्ठाक्रम के मुख्य आधारों की खोज करना ही नहीं अपितु आधुनिक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में यह भी है कि सूचना की सामाजिक प्रतिष्ठा पुरूषों की तुलना में किस प्रकार परिवर्तित

और बेहतर हो सकती है तथा विभिन्न समुदायों के पुरूषों और महिलाओं के मध्य पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक सम्बन्धों और उनकी भूमिका का परिवर्तित स्वरूप क्या हैं?

ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में संचार माध्यमों के अधिक से अधिक योगदान के फलस्वरूप ही सन् 2020 तक विकसित राष्ट्र बनने का हमारा सपना साकार हो सकता है। ग्रामीण विकास की प्रक्रिया प्रथम दृष्ट्या जितनी सरल प्रतीत होती है वस्तुतः उतनी ही वह कठिन भी है। समग्र और सार्थक ग्रामीण विकास के लिए महिलाओं का साक्षर और तत्पश्चात् वैज्ञानिक रूप से साक्षर होना (जिसमें कम्प्यूटर शिक्षा भी शामिल है) अति आवश्यक है। इसके लिए देश, काल व परिस्थिति तीनों के प्रति उनकेसम्पूर्ण आयामों में एक साथ ध्यान रखते हुए प्रयासरत रहना आवश्यक है।ऐसा तभी सम्भव हो पायेगा जब सूचना की उपलब्धता से लेकर जागरूकता प्रसार और अनुभवों के आदान प्रदान तक को सम्भव बनाने वाले संसाधन प्रचुरता में उपलब्ध हों।

पिछले दशकों में विकसित देशों में महिला रोजगार में वृद्धि के फलस्वरूप विकास को नई गति मिली है। फैशन एवं सौन्दर्य प्रसाधन उद्योग में वृद्धि दर तीव्रतम रही है। वैश्विक जी0डी0पी0 में महिलाओं का सामूहिक योगदान तेजी से बढ़ रहा है। यह तब है जब महिलाओं का पुरूषों की अपेक्षा एक ही कार्य के कम पैसे मिलते हैं और वे कम संख्या में उच्च पदों पर पहुँचती हैं। सामाजिक दृष्टि से महिलायें शोषित मानी जाती हैं, परन्तु एक अर्थशास्त्रीय दृष्टि से वह वर्ग के रूप में एक ऐसी सांधन है जिनका उपयोग क्षमता से कम किया गया है। इसलिए यह माना जा रहा है कि अधिकाधिक महिलाओं के शिक्षित-प्रशिक्षित, आई.टी. क्षेत्र में आगे बढ़ने तथा रोजगार में लगने से आबादी (जनसंख्या) निर्धनता (गरीबी) और बेरोजगारी की समस्याओं को हल करने में मदद मिलेगी। विकसित देशों में जनसंख्या की वृद्धि दर एवं कुल विकासदर में महिलाओं की भूमिका के विश्लेषण से कई महत्वपूर्ण (चैकाने वाले) तथ्य सामने आ रहे हैं। पहला तो यह कि यदि अधिकाधिक महिलाएं कामगार (घर के बाहर) बनती हैं तो जी०डी०पी0 में वृद्धि होती है। जापान एवं इटली जहाँ पर अधिक महिलाएं घर पर ही रहती हैं वहाँ जी0डी0पी0 की विकास दर अपेक्षाकृत कम है। जापान एवं इटली में जन्मदर लगभग नकरात्मक हो गयी है। जबकि विकसित देशों में से अमेरिका एवं स्वीडन में यह दर सर्वाधिक है। इससे यह पता चलता है कि बेरोजगार होने के बाद भी स्त्रियां माँ बनने से परहेज नहीं करती। परहेज के पीछे सामाजिक कारण भी हो सकते हैं। तीसरा तथ्य यह है कि 2003 में कामकाजी महिलायें बच्चों की देखभाल पर उतना ही समय व्यतीत करती हैं जितना कि वह 1965 में करती थीं । विचारणीय तथ्य यह है कि जापान, जर्मनी एवं इटली की अर्थव्यवस्थाएं अमेरिका एवं स्वीडन के मुकाबले अधिक संकटग्रस्त है।

यदि विकासशील देशों में महिलाओं की शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी के प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य पर अधिक व्यय किया जाए तो दीर्घकालिक सामाजिक एवं आर्थिक लाभ होंगे। यदि महिलाओं को सुरक्षित रोजगार मिलता है तो व्यक्तिगत व्यय परिवार पर अधिक किया जाता है। सबसे बड़ी बात यह है कि सरकारों में निर्वाचित पदों पर अधिक महिलाओं के होने से शिक्षा स्वास्थ्य एवं गरीबी उन्मूलन पर अधिक व्यय किया जाता है, न कि युद्ध के संसाधन तैयार करने में। 1950 में अमेरिका में महिला श्रमिक मात्र एक तिहाई थे, जबकि आज वे लगभग 50 प्रतिशत है। जबकि इस अवधि में पुरूषों के रोजगार में 12 प्रतिशत की गिरावट आई है। कामकाजी महिलाओं की संख्या में वृद्धि होने से रोजगार परिदृश्य में जो अत्यधिक परिवर्तन आया है वह यह कि निर्माण उद्योग में रोजगार घटे हैं और सेवाओं में रोजगार की वृद्धि हुई है। सूचना प्रौद्योगिकी और मानवीय श्रम के मशीनीकरण के परिणामस्वरूप शारीरिक श्रम की मांग में कटौती से पुरूषों के ही परम्परागत रूप से 'ब्रेड-अर्नर' होने की अवधारणा बदली है। इसी प्रकार विकासशील देशों में भी अधिकाधिक महिलाएं रोजगार में आ रही है। सूचना प्रौद्योगिकी में सक्रीयता का प्रतिफल यह है कि पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में प्रति 100 पुरूषों में 83 महिलाएं हैं। यह विकसित देशों के औसत से अधिक है। सबसे बड़ी बात यह है कि इन देशों एवं अन्य एशियाई देशों के निर्यातोन्मुखी उद्योगों में महिलाओं की भागीदारी 60-80 प्रतिशत है। एकअन्य पहलू यह है कि घरेलू कामकाज के लिए विभिन्न उपकरणों की उपलब्धता ने स्त्रियों के काम को सुविधायुक्त बना दिया है। महिलाओं के अधिक कामकाजी होने से उन महिलाओं को भी रोजगार मिला है जो सहायक या आया का काम कर सकती हैं।

किसी भी देश की जी0डी0पी0 के तीन प्रमुख स्रोत होते है। प्रथम अधिकाधिक लोगों के पास रोजगार हो। द्वितीय प्रति कामगार अधिक पूँजी का निवेश किया जाए और तृतीय नई प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर पूँजी एवं श्रम की उत्पादकता को बढ़ाया जाए। नई प्रौद्योगिकी विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर, इन्टरनेट आदि महिलाओं की मददगार साबित हो रही है और महिलाएं उसके माध्यम से उत्पादकता में वृद्धि का स्रोत बन रही है। इसका अन्दाजा इस

बात से लगाया जा सकता है कि वैश्विक विकास में चीन के योगदान से कहीं अधिक योगदान विकसित देशों की महिलाओं का है। सामान्यतः गृहस्थी की वस्तुओं का क्रय महिलायें करती हैं परन्तु अब एक उपभोक्ता के रूप में स्वास्थ्य रक्षा से लेकर फर्नीचर तक की खरीद में उनकी हिस्सेदारी 80 प्रतिशत तक है। महिलाओं की कार्य क्षमता एवं कार्य कुशलता का अधिकाधिक प्रयोग सिर्फ न्याय एवं समानता का विषय नहीं है। बल्कि यह शुद्ध रूप से व्यापारिक विषय भी है। विश्व व्यापार संगठन के एक अध्ययन से यह तथ्य प्रकाश में आया है कि लैंगिक समानता तथा प्रति व्यक्ति जी0डी0पी0 के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध है।

पुरूष एकाधिकार वाले अधिकांश क्षेत्रों में भारतीय महिलाएं निर्णायक भूमिका में पहुँच रही हैं। लड़की के जन्म को आज भी अभिशाप मानने वाला पितृसत्तात्मक भारतीय समाज तब भी चैंका जब दार्जिलिंग की 25 वर्षीय महिला ताराक्षेत्री ने टैक्सी ड्राइवर के रूप में अपने व्यवसाय का चयन किया था। कार से लेकर अन्तरिक्ष यान तक को संचालित करने का अधिकार अभी तक पुरूषों के पास सुरक्षित था किन्तु अब प्रत्येक वाहन को अपने काबू में करके महिलाओं ने पुरूषों के एकाधिकार को कड़ी चुनौती दी है।

अबला अब सबला बन कर जोखिम और खतरों से खेलने वाले व्यवसायों में धीरे-धीरे ही सही लेकिन पुरूषों के पुरूषार्थ पर आज की महिलाएं भारी पड़ रही हैं। यह बदलते समय के साथ-साथ चलने की महिलाओं की सहज इच्छा का परिणाम है कि वे, वह सब कुछ बहुत अच्छी तरह कर रही हैं जो कल तक उनके लिए वर्जित था। सूचना प्रौद्योगिकी, संचार साधन और समाचार के इलेक्ट्रानिकमाध्यमों ने घर के अन्दर बैठी महिलाओं को भी प्रोत्साहित किया है। अग्निशमन सेवा, सेना, वायु सेना, पुलिस जैसे विशुद्ध पुरूषों के काम में भी महिलाओं की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही है। कल्पना चावला अन्तरिक्ष में उड़ने के अपने सपने को साकार करने के लिए 'नासा' जा पहुँची तो खतरों से खेलने के अपने उत्साह के कारण पावती देश की प्रथम एयर मार्शल बन गयी है। देश की आधी आबादी में आये इस बदलाव से विकास की गति तेज हो रही है। खेत में हल जोतने से लेकर चांद सितारों का तिलस्म तोड़ने तक, सड़क किनारे बैठकर पत्थर तोड़ने से लेकर रोजगार के नये क्षेत्रों की तलाश तक, आंगन में बैठकर चूल्हे चैके के झंझटों से लेकर वैश्विक कूटनीति की गुत्थियाँ सुलझाने तक महिलाएं आज हर क्षेत्र में हैं।

भारतीय समाज में स्त्री एक मौन उपस्थिति थी। लेकिन आज सूचना प्रौद्योगिकी की अहम भूमिका ने भारतीय संस्कृति की दुनिया में स्त्री को एक बेहद प्रखर उपस्थिति बना दिया है। आज परम्पराओं की जकड़न और पश्चिमीकरण की आंधी के बीच यदि संस्कृति के क्षेत्र में कुछ भी मौलिक हो रहा है तो उसका मौलिक श्रेय महिलाओं को जाता है। देश भर में फैली विविध कला संस्कृति की परम्पराओं को गहराई से परखने और उस पर आलोचनात्मक विमर्श करने में कपिला वात्स्यायन, महाश्वेता देवी, कुर्रतुल ऐन हैदर, अरुंधति राय, कृष्णा सोबती आदि महिलाओं की भूमिका एक समाजशास्त्री की भूमिका है, जिन्होंने अनुसूचित जातियों (आदिवासियों), दलितो, महिलाओं आदि के ज्वलन्त प्रश्नों का हल खोजने के लिए साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से आन्दोलनों को निष्कर्ष तक पहुँचाया।

साहित्य से रंगमंच तक, चित्रकला से लेकर संगीत और नृत्य तक भारतीय स्त्री की रचनात्मक उपस्थिति केवल इन कलाओं में एक और आयाम नहीं जोड़ती वरन् सूचना प्रौद्योगिकी में हमनी भूमिका की उपस्थिति दर्ज कराके बारंबार वह कलाओं का ढांचा बदल रही हैं और तकनकी बदलाव की आंधी में सूखे पत्ते की तरह उड़े जा रहे भारतीय समाज को फिर से धरती पर लाकर उसे जीवन रस से सींचा है।

जिस समाज में स्त्री को सम्पत्ति मानकर दांव पर लगाया जा चुका हो, जहाँ स्त्री की व्यक्तिगत सम्पत्ति आज भी गोलमाल सी अवधारणा हो, वहाँ स्त्रियों का हजारों करोड़ रुपये की स्वःअर्जित सम्पत्ति की स्वामिनी होना बहुत बड़ी बात है। भारत की दस सबसे धनाढ्य महिलाओं की सूची में केवल एक दो अपवादों को छोड़कर शेष सभी ने अपनी कौड़ी-कौड़ी सम्पदा अपनी बुद्धि, कौशल और परिश्रम से जोड़ी है, अपनी लगन से सूचना प्रौद्योगिकी के हर आयाम को इन्टरनेट, ई-मेल, लैपटाप आदि की उपयोगिता को जॉचा परखा और उपभोग कर के अपने वैभव का विस्तार करने में लगी हैं। दुनिया की सर्वाधिक प्रभावशाली कारोबारी महिला इन्दिरा नूई अपनी कम्पनी पेप्सिको को नई ऊचाईयों तक पहुँचाकर अमेरिका कीराजनीति में प्रवेश करने का मन बना चुकी हैं। पूरी दुनिया को अपना मानकर चलने वाली इन्दिरा नूई समाज सेवा में आगे बढ़ने की इच्छा रखती हैं। सदियों से समाज पुरूष प्रधान रहा है, आज भी अधिकांश समाजों और परिवारों में बेटी के स्थान पर बेटे को वरीयता दी जाती है। धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं के आधार पर भी पुत्र को ही पारिवारिक सम्पत्ति का उत्तराधिकारी माना जाता है। प्रकार्यात्मक रूप से एक पुत्र ही अपने पूर्वजों का अन्तिम संस्कार कर सकता है। यहीं नहीं उसे ही अपने वृद्ध अभिभावकों का एक मात्र सहारा समझा जाता है। लेकिन अब परिस्थितियां बदल चुकी हैं। आज पुरूष की भाँति महिला भी

www.ignited.in

न केवल शिक्षित है, अपितु सफल भी है। अधिकांश क्षेत्रों में समाज के प्रत्येक वर्ग की महिलायें न केवल अच्छा काम कर रही हैं बल्कि वह एक पुरूष की भाँति अपने अभिभावकों की देखभाल भी कर रही हैं। यही कारण है कि अनेक महिलाओं ने अपने पारिवारिक व्यवसाय को पूर्णतः सम्भाल लिया है और इसके साथ ही वह परिवार की देखभाल भी कर रहीं है। आधुनिक संसाधनों और सूचना प्रौद्योगिकी ने उनकी भूमिका को सहज और सरल बना दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिलाओं की भूमिका में आने वाले अभिनव परिवर्तनों और संवैधानिक मजबूती को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अब भारतीय महिलाओं को “इण्डिया शाइनिंग वूमैन' के रूप में देखना होगा। भारत की चमक बढ़ाती ये महिलाएं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों को कड़ी टक्कर दे रही हैं। निर्विवाद रूप से यह तथ्य स्पष्ट है कि 80 के दशक के बाद महिलाओं की भूमिका को सूचना प्रौद्योगिकी ने एक नया आयाम दिया है। मानवशास्त्रीय दृष्टि से यदि महिलाओं और पुरूषों की भूमिका का वैज्ञानिक विश्लेषण करें तो जैकब्स तथा स्टर्न यह मानते है कि मनुष्य जाति के जन्म से लेकर वर्तमान काल तक मनुष्य के शारीरिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास एवं व्यवहारों के आधार पर महिलाओं और पुरूषों की भूमिकाओं को तुलनात्मक रूप से विभाजित कर उनका वैज्ञानिक अध्ययन किया जा सकता है।

विश्व की विभिन्न संस्कृतियों और समाजों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी न किसी रूप में महिलाओं और पुरूषों की स्थिति एवं भूमिका में महत्वपूर्ण अन्तर है। प्राणिशास्त्रीय आधारों पर इस प्रकार के अन्तर को समझा जा सकता है। आदिम समाजा में इस अन्तर का आधार सांस्कृतिक भी माना गया। प्राणिशास्त्रीय आधारों पर स्त्री और पुरूष की भूमिका और स्थिति का विभाजन तो प्राकृतिक और वैज्ञानिक मान सकते हैं, किन्तु सांस्कृतिक विभाजन न तो वैज्ञानिक है और न ही औचित्यपूर्ण।

इलियट एवं मैरिल, मार्शल ई.जोन्स, हर्ष कॉ विट्स ह्वाइटमैन पाउडर मेकर, एल. सिम्मन्स आदि के मानवशास्त्रीय अध्ययनों के द्वारा हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि प्राणिशास्त्रीय दृष्टिकोण से कुछ कार्यों के लिए पुरूष अधिक उपयुक्त हो सकते हैं और कुछ कार्यों के लिए महिलाएं। यद्यपि इस विभाजन के सांस्कृतिक आधारों पर अनेक रूपान्तरण हो सकते हैं। प्राणिशास्त्रीय सीमाओं के अन्दर संस्कृति स्त्री-पुरूष की भूमिका को बहुत कुछ बदल या पलट देती है। किन्तु हमारी मान्यता यह है कि कुछ ऐसे कार्य हैं जिन्हें कुछ प्राणिशास्त्रीय विशिष्टता के कारण केवल स्त्री या पुरूष ही कर सकते हैं और संस्कृति, धर्म या अन्य कोई परम्परावादी मान्यतायें लाख प्रयत्न करने पर भी बदल नहीं सकती।

प्रत्येक समाज में स्त्रियों और पुरूषों की स्थिति उनसे सम्बन्धित आदर्शों और कार्यों के अनुसार निश्चित होती है। ये आदर्श, मूल्य और कार्य प्रत्येक समाज में समान नहीं हुआ करते। अतः प्रत्येक समाज में महिलाओं की स्थिति एक समान नहीं है। वस्तुतः स्त्रियों की स्थिति तब तक पूर्णतः परिभाषित नहीं की जा सकती जब तक उस समाज के सम्पूर्ण सांस्कृतिक प्रतिमानों का ज्ञान न हो। क्योंकि समाज के सदस्यों की स्थिति भी उन प्रतिमानों का एक आवश्यक अंग हुआ करता है।

1. समाज में स्त्रियों के प्रति मनोभाव क्या है?
2. महिलाओं को उस समाज में किस प्रकार के कार्य करने होते हैं?
3. सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों में महिलाओं का कितना और किसरूप में योगदान हैं?
4. महिलाओं के साथ पुरूषों का व्यवहार कैसा है?

आदि प्रश्नों को ध्यान में रखकर महिलाओं की स्थिति और उनकी भूमिका का विवेचन किया जा सकता है। स्पष्टतः महिलाओं की स्थिति एवं भूमिका का निर्धारण समाज विशेष की आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही किया जाना चाहिये। किस समाज में महिलाओं की स्थिति ऊँची है, किस समाज में नीची या किस समाज में पुरूषों के समान इस सम्बन्ध में कोई अन्तिम निष्कर्ष अभी तक नहीं सम्भव। बहुधा यह सोचा जाता है कि आदिम/ग्रामीण समाजों में स्त्रियों को उचित सम्मान और उनकी सम्मानजनक भूमिका का अभाव है, यह धारणा गलत है। इसी प्रकार यह धारणा भी गलत है कि नगरीय या शहरी क्षेत्रों में सभी महिलाओं की स्थिति और भूमिका ऊँची है। संवैधानिक रूप से स्त्री और पुरूष दोनों को ही समान अधिकार प्राप्त हैं और वे एक दूसरे के साथ मिलकर अपनी-अपनी भूमिकाओं का निर्वाहन कन्धे से कन्धा मिलाकर कर सकते हैं। इसी प्रकार अनेक सम्भावनाएं हो सकती हैं परन्तु यह निर्भर हैं महिलाओं की शिक्षा, प्रशिक्षण, सांस्कृतिक प्रतिमानो और सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा आने वाले सामाजिक मूल्यों, आदर्शों और भावनाओं में परिवर्तन से।

मूलतः सामाजिक पुनर्निमाण में महिलाओं की भूमिका और आधुनिक महिलाओं के निर्माण में समाज की भूमिका दोनों ही विषय एक दूसरे के परिपूरक हैं। जब हम समाज के

www.ignited.in

पुनर्निमाण में महिलाओं की भूमिका की बात करते हैं तो सबसे पहली बात मस्तिष्क में टकराती है वह यह कि ब्रहम सत्य क्या है? हमारे देश में लिखित रूप में तो संविधान को माना गया है लेकिन जैसे-जैसे वास्तविकता सामने आती हैं संविधान और उसके व्यवहारिक स्वरूप में खाई कम होती रहती है। मूलतः ऐसा लगता है कि भारत जितना प्रोग्रेसिव और उदारवादी संविधान दुनिया में कहीं नहीं है और उसमेंमहिलाओं, दलितो व सभी पिछड़े हुए वर्गों को सम्पूर्ण अधिकार दिये गये हैं। ऐसे कानून हैं जो महिलाओं की सुरक्षा उनकी आर्थिक और सामाजिक प्रगति का पूरा का पूरा उत्तरदायित्व राज्य के कन्धों पर देता है किन्तु सामाजिक व्यवहार में राज्य और उसकी विभिन्न एजेन्सियां महिलाओं की भूमिका के प्रति परम्परागत रूप से मौन रहती है। जितनी उदारता से हमारे राजनेता, प्रधानमंत्री, नारी मुक्ति की या दलित मुक्ति की बात करते हैं वह उदारता प्रान्तीय स्तर तक आकर थोड़ी कम होती हैं, नगर प्रशासन तक आकर और कम होती है और गांव तक आते-आते सत्य और मिथ्या की खाई बिल्कुल पट जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन “उ0 प्र0 में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण समृद्ध करना - आगरा जिले का एक अध्ययन” पर केंद्रित है। मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:

1. सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक विकास।

2. प्रशासनिक और राजनीतिक महिला विकास के स्तर को उजागर करना।

अध्ययन का महत्व

शोध अध्ययन विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण पर जानकारी प्रदान कर सकता है। हालांकि, यह महिलाओं के लिए बाहरी दुनिया में एक सीधी खिड़की खुलती है और सूचना अब विरूपण या किसी भी प्रकार के सेंसरिंग के बिना बहती है और उनके पास उनके पुरुष समकक्ष के समान जानकारी तक पहुंच होती है।

इसके अलावा अध्ययन आगरा जिले में महिला सशक्तिकरण के आधार पर वर्तमान परिदृश्य में सूचना प्रौद्योगिकी पर समीक्षा करेगा यह प्रौद्योगिकी विकास में परिप्रेक्ष्य और उनकी वर्तमान स्थिति की अधिक समझ को व्यापक बनाता है। यह अध्ययन इस क्षेत्र के लिए फायदेमंद होगा कि सूचना प्रौद्योगिकी में काम करने वाली महिलाएं और स्थानीय शरीर संस्थानों में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों को आगरा जिले में आईसीटी के माध्यम से अधिकार प्राप्त किया जा रहा है। सूचनाओं तक पहुंच महिलाओं के सशक्तिकरण से संबंधित केंद्रीय मुद्दे के रूप में देखी जा सकती है। आईसीटी पुरुषों द्वारा किए गए संभावित खतरों के लिए काउंटर अटैक को लैस करने के लिए महिलाओं के प्रति जागरूकता को बढ़ाएगा।

उपसंहार

सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाएँ. अपनी दक्षता एवं रचनात्मकता का परिचय दे रही हैं। फैशन डिजाइनिंग, इन्टीरियर डेकोरेटर, आर्किटेक्चर, एनीमेशन और ग्राफिक डिजाइनिंग में फ्री लांसार के तौर पर महिलाएं अब घर बैठे कार्य कर रही है। क्योंकि टेलीवीजन, इन्टरनेट, बी.डी. ओ. कॉन्फ्रेंसिंग और आधुनिकतम संचार संसाधनों ने उनके लिए सभी आवश्यक सुविधायें और 'बाजार' घर पर ही उलपब्ध करा दिया है। विशेष रूप से ग्राफिक डिजाइनर्स के रूप में महिलाओं को कैरियर के अनेक अवसर उपलब्ध करा दिये हैं। विज्ञापन एजेंसियों, राष्ट्रीय समाचार पत्रों, जन सम्पर्क विभाग तथा फिल्म और टेलीवीजन के क्षेत्र में ग्राफिक डिजाइनर्स की बहुत आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त साउण्ड एडीटर, इमेज एडीटर, मल्टी मीडिया प्रोग्रामर, कन्टेन्ट डेवलपर आदि के रूप में महिलाएं अच्छा धनोपार्जन कर सकती है। इससे फिल्म एनीमेशन के क्षेत्र में भी उनकी अच्छी सम्भावनाएं उत्पन्न होती है।

संदर्भ

1. एडोमी ई शेयर नाना (2010), “आईसीटी नीति के लिए ढांचेः सरकारी सामाजिक और कानूनी मुद्दे, आईजी ग्लोबल पब्लिशर्स, पृष्ठ 165-167

2. अहवत और नीरजा (1995), “महिला संगठन और सोशल नेटवर्किंग”, नई दिल्ली।

3. अजीत कुमार सिंह (2008), “नई आयामों के लिए महिला सशक्तिकरण”, दीप और दीप प्रकाशक, नई दिल्ली।

4. अनिल कुमार, ठाकुर और कृष्णा (2009), “शासन, लोकतंत्र और विकास”, दीप और दीप प्रकाशक, नई दिल्ली, पृष्ठ 3-4

5. अनिता गुरुमुर्ती (2004), “लिंग और आईसीटी”, विकास अध्ययन संस्थान, पृष्ठ 1-3

www.ignited.in

6. Anyamale-SC (2004), ''उच्च शिक्षा में संस्थागत प्रबंधनः प्रबंधन में गुणवत्ता में सुधार के लिए लीडरशिप दृष्टिकोण का एक अध्ययन'', फिनलैंड विश्वविद्यालय, पीजी 11-12

7. अथरेय। वी.बी. और राजेश्वरी के.एस. (2012), ''पीआरआई संस्थानों में महिलाएं'', नई दिल्ली।

8. बिजू एमआर (2012), ''ग्रामीण विकास के तहत ग्रामीण विकास'', संकल्पना प्रकाशन कंपनी, नई दिल्ली।

9. कैरोलीन स्वीटमैन (2005), ''लिंग और सहस्राब्दी विकास लक्ष्य'' ऑक्सफैम प्रकाशक, पृष्ठ 13।

10. कार्लोइन वामाला (2012), ''आईसीटी के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना'', स्पाइडर प्रकाशन, स्टॉकहोम।

11. सेसिलिया स्वास्ती मिटर (2005), ''लिंग और डिजिटल अर्थव्यवस्था परिप्रेक्ष्य'', ऋषि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 9-12

12. सेंटर फॉर रिसर्च इनोवेशन एंड साइंस पॉलिसी (2011), ''आईसीटी और भारतीय ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरणः हम किस पहल की पहल सीख सकते हैं? '', हैदराबाद, पृष्ठ 1-2।

Corresponding Author

Suneeta Singh*

Research Scholar, Swami Vivekanand University, Sagar (MP)